राज कॉमिक्स

मूल्य 15.00 संख्या 144

बांकेलाल मुकद्दर का धनी

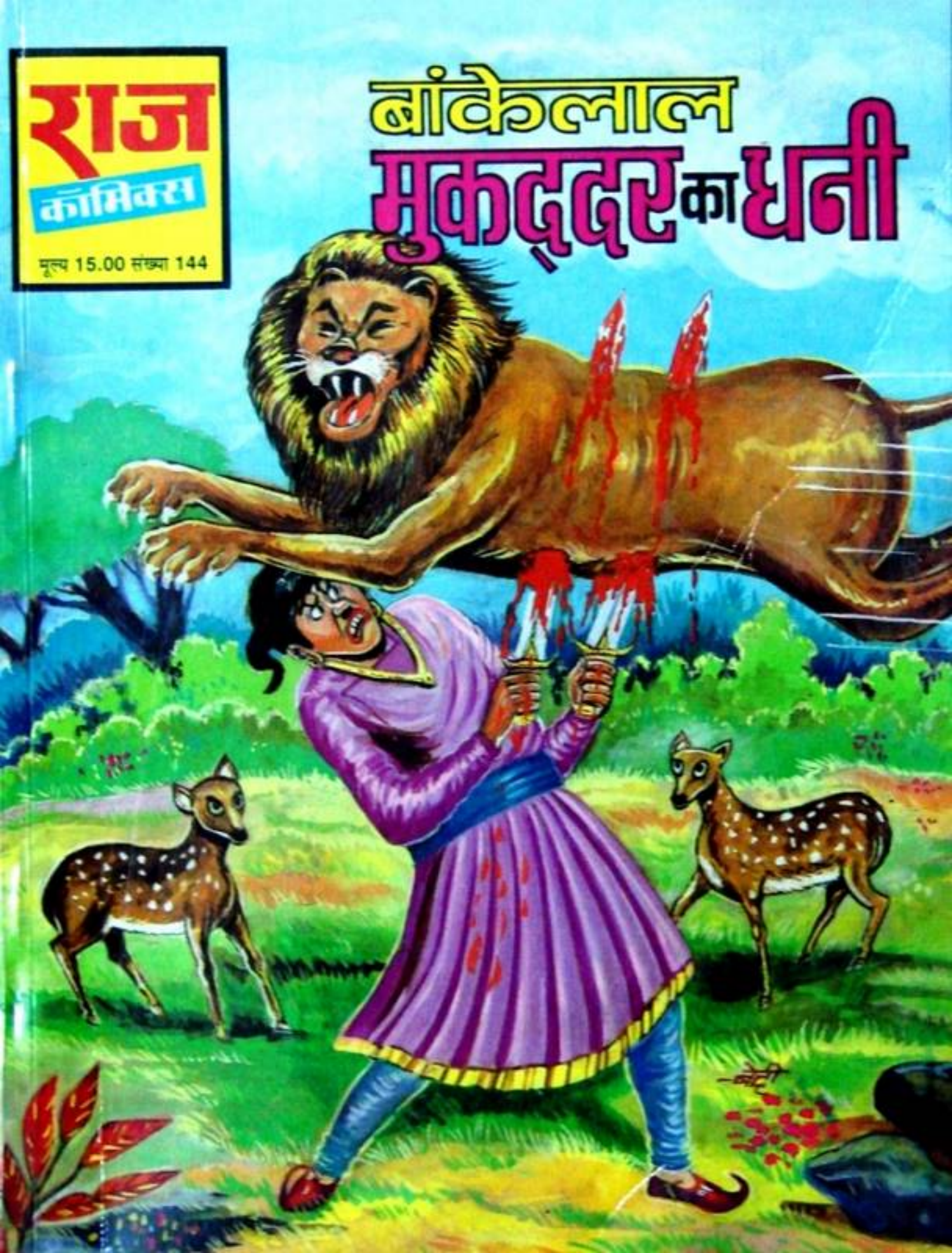

मुकद्दर का धनी

चित्रांकन: बेदी
कहानी : राजा
सम्पादक: मनीषचंद्र गुप्त

विशाल गढ़ के राजा विक्रमसिंह के महल में बांकेलाल के दिन बड़े मजे से गुजर रहे थे। महल में उसके खाने-पीने में कोई कमी नहीं थी। एक दिन बांकेलाल दरबार में बैठा हुआ था कि तभी—

दुहाई है महाराज! मैं लुट गया, बरबाद हो गया। बू हू हू हू

अरे, यह तो नगर-सेठ सुदर्शनपाल है, लेकिन यह इस तरह फटेहाल क्यों है?

??

फरियादी, तुम्हें जो भी कहना है साफ-साफ कहो।

महाराज, मेरी वर्षों की गाढ़ी कमाई को चोर चुराकर ले गये। मैं बर्बाद हो गया। बू हू हू हू।

क्या? हमारे राज्य में चोरी? महामंत्री धर्मसिंह, आप स्वयं जल्दी से जल्दी इस चोरी का और चोर का पता लगवाएं। सेठजी का चोरी गया धन इन्हें हर हाल में वापस मिलना चाहिए।

जी महाराज!

इस तरह चक्रधर को आश्वासन देकर विदा किया गया।

इसी कारण स्वयं राजा, मंत्रीगण व राज्य के सारे सैनिक अधिकारी हैरान व परेशान थे—

महामंत्री जी, यह सब क्या हो रहा है? आप नगर में हो रही चोरियों को रोकने व चोरों को गिरफ्तार करने का कोई उपाय क्यों नहीं करते??

महाराज, मुझे खेद है, मैं लाख यत्न करने के बाद भी नगर के मामूली चोरों को नहीं पकड़ सका। इसी कारण मैं हैरान व परेशान हूं...

...लेकिन मैं और शायद आप भी इसी हैरानी व परेशानी के कारण बांकेलाल जी जैसे विलक्षण बुद्धि वाले व्यक्ति को भूल गये हैं।

??

वार्तालाप में अपना नाम आते ही बांकेलाल मन ही मन चौंक गया।

क्या मतलब? तुम कहना क्या चाहते हो, महामंत्री धरम-सिंह??

महाराज, नगर में हो रही चोरियों और बालाक चोरों के विषय में यदि कोई सुराग लगा सकता है तो वह हैं बांकेलालजी।

उफ! यह महामंत्री का बच्चा पता नहीं अब मेरे खिलाफ कौन सा षड्यंत्र रचने जा रहा है?

ओह! वाकई हम बांकेलालजी जैसे दूरदर्शी, बुद्धिमान व बहादुर हस्ती के अपने पास होते हुए भी व्यर्थ ही चिन्तित हो रहे थे।

तो बांकेलालजी, हम नगर में हो रही चोरियों व चोरों का पता लगाने की पूरी जिम्मेदारी आप पर डालते हैं।

ज...जी-हां, महाराज, क्यों नहीं! क्यों नहीं!

कम्बख्त! कैसे सुख और चैन के दिन कट रहे थे, पर बुरा हो इस बूढ़े महामंत्री का, लगता है इसे मेरा सुख-चैन अच्छा नहीं लगता। देख लूंगा कभी इस बूढ़े को भी।

जबकि बांकेलाल के मन में उठ रहे विचारों से अनभिज्ञ राजा उससे कह रहा था—

हमें आपसे इसी उत्तर की उम्मीद थी बांकेलालजी! महामंत्रीजी, उन चोरों के खोज कार्य में जो धन या सुविधा की आवश्यकता हो वह बांकेलालजी को खजाने से दी जाए।

जी महाराज!

इस तरह बांकेलाल नगर के चोरों की खोज में निकल पड़ा—

हुंह, उल्लू राजा! भला यह भी कोई बात है जिन चोरों को पूरे राज्य की सेना न पकड़ सकी उन्हें मैं अकेला कैसे पकड़ सकता हूं? राजा समझता है कि मेरे पास अलादीन का चिराग है, जो मैं चोरों का पता लगा लूंगा...

... खैर मुझे क्या? राज्य की ओर से उन चोरों की खोज के लिए मुझे जो धन-सुविधा मिलती है, क्यों न मैं उससे मौज-उड़ाऊं?

फिर चोरों की खोज के लिए प्रतिदिन राजा की ओर से मिलने वाले धन से वह खूब मौज उड़ाने लगा—

वाह... वाह क्या नाचती हो चमेली जान। बस दिल निकाल लेती हो।

और बांकेलाल ने खुश होकर उसे एक हार इनाम में दिया—

हम तुम्हारे नाच से खुश होकर यह हार तुम्हें देते हैं।

असली मोतियों का है। बहुत कीमती होगा।

अपने बाप का क्या है? चोरों को पकड़ने के लिए जो धन मिल रहा है उसी से खरीदा है।

बांकेलाल को बचपन में की गई शरारत के कारण शिव का ऐसा शाप मिला था कि जब भी वह किसी का बुरा करने की कोशिश करेगा, उस आदमी को हानि के बजाए लाभ होगा और इसी चक्कर में बांकेलाल को भी थोड़ा सा लाभ हो जाएगा। बांकेलाल के सम्बन्ध में शुरू से जानने के लिए पूर्व प्रकाशित कॉमिक्स 'बांकेलाल का कमाल' और 'कर बुरा हो भला' अवश्य पढ़िए!

इस तरह मौज उड़ाते बहुत दिन हो गए तो एक दिन बांकेलाल ने सोचा—

अरे, मौज-मस्ती करते बहुत दिन हो गए, अब यहां से नौ-दो-ग्यारह हो लो बेटा बांकेलाल, नहीं तो राजा विक्रमसिंह किसी दिन अब तक का सब खाया-पिया निकाल देंगे।

और यह सोचते ही एक दिन बांकेलाल घोड़े पर सवार हो वहां से भाग निकला।

जब वह नगर के बाहर बनी एक पुरानी इमारत के सामने से गुजर रहा था तो इमारत के अन्दर से आती आवाजें सुनकर वह चौंक पड़ा—

??

देखो रामू, मेरे पास यह एक लाख स्वर्णमुद्राएं हैं, उनमें से एक हजार पांच सौ स्वर्णमुद्राएं मैं तुमको देता हूं...

वास्तव में उस पुरानी इमारत में एक पाठशाला थी जिसमें अध्यापक बच्चों को गणित पढ़ा रहा था—

?.....

... और यह तीन सौ पचास स्वर्ण मुद्राएं कालू को दे दीं, तो बाकी यह मेरे पास अठानवें हजार डेढ़ सौ स्वर्ण मुद्राएं फिर भी बचीं। हैं न?

जबकि पाठशाला के बाहर खड़े बांकेलाल की आंखें एक नई शरारत के लिए चमक रही थीं—

हे भगवान! इस टूटी-फूटी इमारत में एक लाख स्वर्ण-मुद्राएं! मैं आज ही इस इमारत में झाड़ू फेर दूंगा। फिर एक लाख स्वर्णमुद्राओं के हाथ लगते ही मैं किसी दूसरे राज्य में जाकर ऐश्वर्य से रहूंगा।

मन में यह विचार लिए बांकेलाल एकबार फिर आगे की ओर चल पड़ा।

उस रात नगर के प्रत्येक स्थान पर सैनिक पूरी सतर्कता से पहरा दे रहे थे...

...लेकिन उन सैनिकों की नजरों से अपने आप को बचाते हुए दोनों चोर चम्पत और सम्पत सेठ जुगनू आढ़तिया की दुकान की ओर बढ़ रहे थे–

थोड़ी ही देर बाद वे दोनों सेठ जुगनू आढ़तिया की दुकान पर छत से नकब काट कर...

...उनकी दुकान के माल को साफ करने में लगे हुए थे–

वाह! भई सम्पत, आज तो हमारी आशा से अधिक सम्पत्ति हमारे हाथ लगी है।

हां, भई चम्पत! अगर हम इस माल को लेकर चम्पत हो जाने में सफल हो गए तो यह हमारे जीवन की सबसे बढ़िया चोरी होगी। हमें मालामाल कर देगी और फिर हम कभी चोरी नहीं करेंगे।

फिर जैसे ही वे दोनों चोरी के माल के साथ छत पर पहुंचे कि तभी एक सैनिक की नजर उन पर पड़ गई–

दारोगाजी, वह सामने छत पर देखिए। वह दोनों कौन हैं?

??

अगले पल जब दोनों ने उन सैनिकों को देखा तो—
चम्पत भाई, खतरा भागो !!
!!!
ऐ खबरदार ! कौन हो तुम लोग ? नीचे उतर कर यहां आओ !

दोनों बगल वाली छत पर कूदते हुए भाग निकले—

जब तक सैनिक छत पर पहुंचे, चोर एक छत से दूसरी छत फांदते हुए जल्दी ही उनकी नजरों से ओझल हो चुके थे—
उफ ! पता नहीं कम्बख्त कहां भाग निकले ?
हां दरोगाजी, अगर वे दोनों चोर हमारे हाथ लग जाते तो राजा की ओर से हमें अच्छा-खासा इनाम मिलता।

अभी दरोगा नेकचन्द और सैनिक उन चोरों के निकल भागने पर अफसोस कर ही रहे थे कि तभी—
नेकचन्द, यहां क्या कर रहे हो तुम लोग ?
ओह ! महामंत्री धरम सिंहजी यहां इस समय ?
व...वो हम लोग नगर के उन्हीं मशहूर चोरों का पीछा कर रहे थे, लेकिन अफसोस वह हम लोगों को धोखा देकर निकल भागने में सफल हो गये हैं।

क्या? तो तुम लोगों ने उन चोरों को देखा है??

जी हां, हुजूर! वो दोनों चोर अभी-अभी इस ओर भागे हैं।

हूं, ठीक है, नेकचन्द! तुम लोग मेरे साथ उस ओर चलो जिधर वह चोर भागे हैं। हमें चूंकि पहली बार उनका कोई सुराग मिला है। अतः हमें आसानी से हार मानकर उनका पीछा नहीं छोड़ देना चाहिए।

जी हुजूर!

फिर स्वयं महामंत्री नेकचन्द और सैनिकों के साथ चोरों की खोज में चल पड़ा।

इधर बांकेलाल आधीरात में नगर के बाहर वीराने में बनी पाठशाला की उसी टूटी-फूटी इमारत के सामने पहुंचा—

हूं, तो एक लाख स्वर्णमुद्राएं प्राप्त करने के लिए अब मुझे इस इमारत में प्रवेश करना पड़ेगा। एक बार स्वर्ण-मुद्राएं मेरे हाथ लग जाएं तो...

दरवाजा तो इस इमारत का कोई खास मजबूत मालूम नहीं पड़ता, थोड़े से ही यत्न से खुल जाना चाहिए। खैर, देखता हूं।

दरवाजे के पास पहुंचकर बांकेलाल ने जैसे ही दरवाजे पर हल्का सा दबाव डाला तो—

चर्र... चर्र...

अरे! यह तो पहले से ही खुला हुआ था। लगता है कुदरत भी इस चोरी में मेरी सहायता कर रही है। अब शीघ्र ही मैं एक लाख स्वर्णमुद्राओं का स्वामी हूंगा। ही. ही. ही.

इमारत के अन्दर पहुंचकर—

आखिर वह कौन सा कमरा हो सकता है जहां वे एक लाख स्वर्णमुद्राएं होंगी।

तभी– ओह ! उस सामने वाले कमरे के दरवाजे की झिरी से रोशनी बाहर आ रही है। मुझे देखना चाहिए कहीं इमारत के स्वामी जाग तो नहीं रहे।

फिर दरवाजे की झिरी से कमरे का दृश्य देखते ही बांकेलाल बुरी तरह चौंक पड़ा–

हे भगवान ! यहां तो सोने के आभूषणों का भण्डार है।

और शायद उसके चौंकने के कारण ही दरवाजे पर हल्का सा दबाव पड़ा तो वह दरवाजा खुल गया–

क... कौन है?

???

हे भगवान! खतरा! भागो बेटा बांकेलाल वरना तुम्हारी खैर नहीं।

... और अन्दर चोरी के माल का बटवारा करते चम्पत और सम्पत बांकेलाल को देखकर घबरा गये तभी–

अरे ! यह तो भाग रहा है। चम्पत भाई, हो न हो यह कोई मुसाफिर था या फिर हमारी ही बिरादरी का था।

हां, लगता तो यही है, लेकिन अब इसके इस तरह निकल भागने से हमें खतरा हो सकता है। इसे रोको।

अगले ही पल–

ऐ रुको, खबरदार ! भागने की कोशिश मत करो, वरना मारे जाओगे।

लेकिन जब बांकेलाल ने उनकी धमकी की परवाह नहीं की तब सम्पत ने अपने कपड़ों में छुपा खंजर निकाला—

बचकर कहां जाएगा बच्चू! अभी देखता हूं तुझे।

और अगले ही पल- सम्पत ने खंजर फेंककर मारा—

आऽऽ ई.ई.ई...

दरवाजे से बाहर निकलकर घायल बांकेलाल ने उस मुख्य दरवाजे की बाहर से कुण्डी लगा दी—

हाय! बेटा बांकेलाल, जब तक इस इमारत के स्वामी किसी अन्य रास्ते या तरीके से बाहर निकले, जान बचानी है तो भाग ले यहां से। नहीं तो चोरी के अपराध में पकड़ा जाएगा।

फिर बांकेलाल निकट ही खड़े अपने घोड़े की तरफ बढ़ा ही था कि तभी चोरों की तलाश में निकला महामंत्री वहां पहुंचा और बांकेलाल को देखकर चौंक पड़ा—

अरे! बांकेलाल, तुम और यहां, इस समय?

बुरे फंसे बेटा बांकेलाल! जबकि महामंत्री यहां पहुंच ही गया है तो शीघ्र ही तेरी चोरी वाली योजना की पोल खुल जाने वाली है, और अब तुझे लाख स्वर्ण मुद्राएं नहीं, बल्कि कारागार की चक्की आटा पीसने को मिलेगी।

क्या बात है बांके ...अरे! तुम्हारे कन्धे में खंजर... खून!! तुम्हारा यह हाल किसने और क्यों किया?
व-वो- इमारत...
???
अपनी चोरी की पोल खुलते देख भय से बांकेलाल की आंखों के सामने अंधेरा छाता चला गया—
और अगले ही पल—
अरे! यह तो बेहोश हो गया।
???
नेकचंद, अभी बांकेलालजी इस इमारत के बारे में कुछ संकेत करते हुए शायद कुछ बताना चाहते थे, लेकिन बीच में बेहोश हो गए...
...तुम इस इमारत में प्रवेश कर यह जानने की कोशिश करो कि बांकेलाल आखिर हमसे कहना क्या चाहता था?
जी, हुजूर!
जबकि पाठशाला की इमारत के अन्दर—
खड़-खड़
अब क्या होगा?
उफ! कम्बख्त हमारे खंजर से घायल तो हो गया था, लेकिन जाते-जाते हमारे लिए एक मुसीबत पैदा कर गया। दरवाजा बाहर से बन्द कर गया।

भाई चम्पत, तू जल्दी से अन्दर से सारी सम्पत्ति उठा ला। तब तक मैं इस दरवाजे को तोड़ने का यत्न करता हूं।

हां भई सम्पत ! अब हमारा यहां से जितनी जल्दी हो सके चम्पत हो जाना ही ठीक है, क्योंकि मुझे वह घायल खतरे का अवतार मालूम होता है।

फिर चम्पत अन्दर कमरे में पड़ा चोरी का माल लेने चला गया...

...और सम्पत अपने कन्धों के जोर से दरवाजा तोड़ने का यत्न करने लगा—

धाड़-धाड़

और बाहर—

अरे, यह क्या? लगता है अन्दर से कोई दरवाजे को तोड़ने का यत्न कर रहा है, लेकिन रात को इस समय भला कौन हो सकता है?

धाड़

फिर दरोगा नेकचन्द के आदेश पर जब एक सैनिक ने दरवाजे पर लगी कुन्डी खोली तो—

!!!

??

उफ!

अई...ई ऐ मैं मरा।

भड़ाक

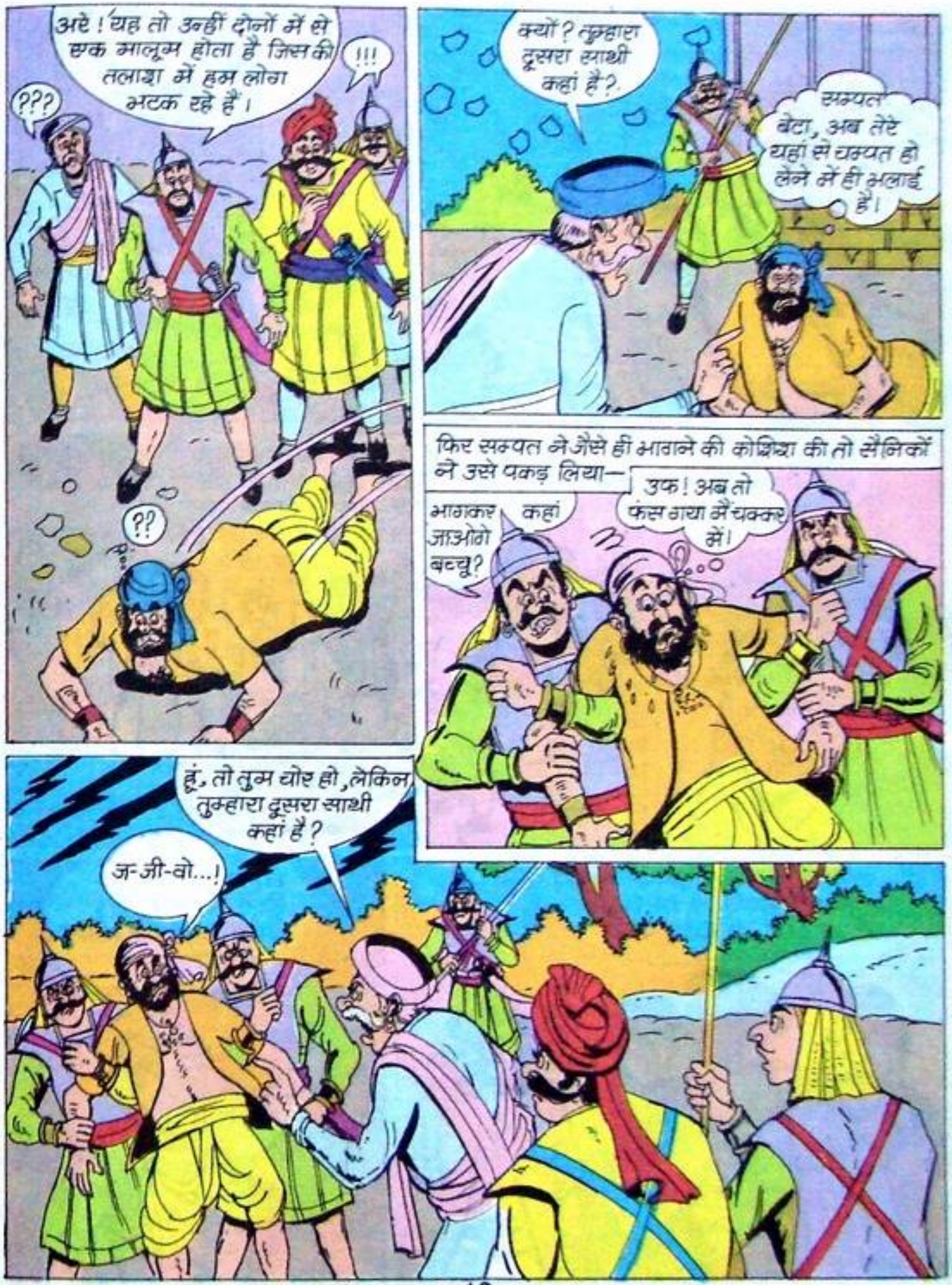
अरे ! यह तो उन्हीं दोनों में से एक मालूम होता है जिस की तलाश में हम लोग भटक रहे हैं।
???
!!!
??
क्यों ? तुम्हारा दूसरा साथी कहां है ?.
सम्पत बेटा, अब तेरे यहां से चम्पत हो लेने में ही भलाई है।
फिर सम्पत ने जैसे ही भागने की कोशिश की तो सैनिकों ने उसे पकड़ लिया—
भागकर कहां जाओगे बच्चू?
उफ! अब तो फंस गया मैं चक्कर में।
हूं, तो तुम चोर हो, लेकिन तुम्हारा दूसरा साथी कहां है ?
ज-जी-वो...!

तभी–
हुजूर, यह देखिये इसका दूसरा साथी।
पकड़ लो इसे भी।
???

नेकचन्द, इन थैलों की तलाशी लो।

फिर जब उन थैलों को खोलकर देखा गया तो–
हूं तो हमारा सन्देह ठीक ही निकला। तुम दोनों वही चोर हो जिनके कारण आजकल नगर की प्रजा और राजा की रातों की नींद उड़ी हुई है...

... और मेरे ख्याल से तुम दोनों ने ही हमारे बांकेलालजी को घायल किया है, जो अभी तक बेहोश पड़े हैं। क्यों?
जी... जी... हुजूर।

सैनिको, ले चलो इन दोनों को। कल सुबह इनको महाराज के सामने पेश किया जाएगा...

...और नेकचंद तुम तुरन्त बांकेलालजी को उठाकर महल में पहुंचवाओ! इनकी तुरन्त राजवैद्य से चिकित्सा करानी है।
जी हुजूर!
फिर दो दिन बाद जब बांकेलाल को होश आया तो—.
अ...आह
ओह! शुक्र है भगवान का, बांकेलाल को होश आ गया।
क्या हो...श...लेकिन मुझे हुआ क्या था? और राजवैद्य जी आप...!
अचानक बोलते-बोलते बांकेलाल के दिमाग को एक झटका सा लगा...
...और अगले ही पल होश खोने से पहले का दृश्य उसके मानस पटल पर घूमने लगा—
आऽऽऽ ई-इ ई...
तभी—
क्या सोचने लगे बांकेलाल?
महाराज मुझे क्षमा कर दीजिए, मैं चोरी...

... इसमें क्षमा मांगने की क्या बात है बांकेलाल, बेशक तुम चोरों को अपने हाथों से गिरफ्तार नहीं कर सके, लेकिन तुम्हारे ही प्रयत्न से महामंत्री उन चोरों को पकड़ने में सफल हुए हैं।...
???
... वाकई बांकेलाल, हम मानते हैं कि तुम असाधारण विद्वान ही नहीं, बल्कि एक बहादुर इन्सान हो। उन चोरों के लिए तुमने अपनी जान की बाजी लगा दी। भई वाह! जवाब नहीं तुम्हारी कर्तव्य-परायणता का।
और राजा की पूरी बात सुनते ही बांकेलाल के मस्तिष्क में एक धमाका सा हुआ—
वाह! अरे, चोर सचमुच ही पकड़े गए। मैं तो यह सोचकर घबरा रहा था कि चोरी के माल के साथ मुझे ही चोर समझकर पकड़ लिया जाएगा।
अरे, जब ऊपर वाला मुझे छप्पर फाड़कर दे रहा है तो मुझे लेने में क्या हर्ज है। बेटा बांकेलाल, चुप-चाप झोली भरते रहो।
क्या बात है बांकेलाल? इस समय तुम्हें ज्यादा तकलीफ महसूस हो रही है?
ज...जी महाराज, कोई खास नहीं।

बांकेलालजी, आप तनिक भी चिन्ता न करें, मैंने अपने घर से संजीवनी सुधा रस मंगवाया है जिसकी चार बूंद पीते ही आपका घाव न केवल भर जायेगा, बल्कि आपकी कमजोरी भी जाती रहेगी।

हां, वैद्यजी, बांकेलाल जी को कल तक पूर्ण स्वस्थ होना जरूरी है, क्योंकि कल नगर के कुछ व्यापारियों ने इन्हें सम्मानित करने के लिए एक विशेष समारोह का आयोजन किया है।

ऐसा ही होगा महामंत्री-जी।

और दूसरे दिन बांकेलाल पूरी तरह स्वस्थ, राज-दरबार में ही नगर के व्यापारियों द्वारा आयोजित समारोह में बैठा था—

सज्जनो, मैं महामंत्री धरमसिंह विशालगढ़ राज्य तथा नगर के प्रतिष्ठित व्यापारियों की ओर से बांकेलालजी को धन्यवाद देता हूं। उन्होंने अपनी जान पर खेलकर न केवल व्यापारियों का चोरी गया धन वापस दिलवाया है...

...बल्कि इन्हीं के प्रयत्नों से चोर पकड़े गए हैं। अतः मैं राज्य की ओर से बांकेलालजी को एक सौ एक तथा नगर व्यापारियों की तरफ से पांच सौ एक स्वर्णमुद्राएं उपहार स्वरूप भेंट करता हूं। बांकेलालजी मंच पर आकर उपहार ग्रहण करें।

उपहार लेते समय बांकेलाल सोच रहा था—

कम्बख्त, इस राजा से तो ये नगर सेठ ही अच्छे हैं जो मुझे पांच सौ एक स्वर्ण मुद्राएं पुरस्कार में दे रहे हैं। वाह, बेटा बांकेलाल, वाकई तू तो मुकद्दर का धनी है।

बांकेलाल की जय!

और यह समारोह पूरी तरह समाप्त भी नहीं हुआ था कि तभी—

महाराज की जय हो। शीतलगढ़ का विशेष राजदूत आप के दरबार में पेश होने की इजाजत चाहता है।

राजदूत को सम्मान के साथ यहां लाया जाए।

फिर—

महाराज की जय हो।

कहो राजदूत, कैसे आना हुआ?

महाराज, हमारे महाराज विजयेन्द्र सिंह ने आपसे अनुरोध किया है कि आप कुछ दिनों के लिए अपने राज-अतिथि बांकेलाल जी को मेरे साथ भेज दें, क्योंकि इस समय हमें बांकेलाल की मदद की आवश्यकता है।

बांकेलाल की मदद की आवश्यकता... राजदूत तुम्हें जो कहना है साफ-साफ कहो।

???

महाराज, हमारी राजकुमारी सपनलता को दस सींगों वाला एक राक्षस उठाकर ले गया है। बहुत यत्न करने के बाद भी हम उस राक्षस का पता लगा सकने में असफल रहे हैं...

...लेकिन हमारे महाराज को पूरा यकीन है कि बांकेलालजी अवश्य ही राजकुमारीजी को राक्षस की कैद से मुक्त कराने में सफल होंगे।

उफ, बेटा बांकेलाल! फिर एक नई मुसीबत! लगता है तेरी किस्मत में मुसीबतें ही मुसीबतें हैं।

उन दिनों बांकेलाल विशालगढ़ ही नहीं आस-पास के सारे राज्यों में लोकप्रिय था। यह जानने के लिए पूर्व प्रकाशित 'राजकोष के लुटेरे' कॉमिक अवश्य पढ़ें।

अवश्य राजदूत! हमें अपने मित्र के किसी काम आने पर बेहद खुशी होगी। और बांकेलाल, हमें विश्वास है कि तुम हमारी जुबान की इज्जत रखते हुए शीतलगढ़ अवश्य जाओगे।

ज... जी मैं...

उससे पहले कि बांकेलाल कुछ कहता कि तभी—

महाराज, बांकेलालजी और आपकी बात काट दें ऐसा कभी नहीं हो सकता। क्यों बांकेलालजी?

ज...जी हां, महाराज!

फिर शीतलगढ़ का राजदूत उसी दिन वापस लौट गया...

...और बांकेलाल दूसरे दिन पूरी तैयारी के साथ शीतलगढ़ की ओर चल पड़ा।

फिर लगातार यात्रा के बाद बांकेलाल जब एक घने जंगल से गुजर रहा था तो—

...कुछ दूर आगे बढ़ने पर—

मन में यह विचार आते ही बांकेलालने घोड़े की पीठ पर लटक रही दोनों तलवारें निकालीं...
जो अगर मैं एक साथ आक्रमण करके इन दोनों को न मार सका तो हो सकता है इनमें से एक भाग निकले।
...और दबे-दबे अन्दाज में निकट ही घास चर रहे हिरन और हिरणीकी ओर बढ़ा—
ठीक उसी समय हिरणी और हिरण पर घात लगाए बैठे एक शेर ने छलांग लगाई—
गुर्रर्र
अरे! बाप रे!
भयभीत बांकेलाल पलटा और—
अर्र्र... र्र
खचाक
खचाक
फिर—
धन्यवाद मित्र! तुमने मेरे और मेरी हिरणी के जीवन की रक्षा की है। अत: बदले में मैं तुम्हें यह कस्तूरी देता हूं जिसकी सुगन्ध के आगे सब सुगन्धें छिप जाती हैं।
आंय!
इतना कहकर हिरण ने अपनी नाभि में लगी कस्तूरी अपने मुंह से निकालकर बांकेलाल के सामने डाल दी—

फिर शीतलगढ़ पहुंचने पर बांकेलाल का राजा द्वारा भव्य स्वागत हुआ–

आओ...आओ बांकेलालजी, आपके आ जाने से मेरा खोया हुआ विश्वास पुन: लौट आया है। मुझे विश्वास है कि आप दस सींगों वाले राक्षस से मेरी बेटी को अवश्य ही मुक्त करा लाएंगे।

हूंह मूर्ख! मुझे क्या पड़ी है कि मैं तेरी बेटी के लिए अपनी जान मुसीबत में डालूं।

ज-जी हां महाराज आपके विश्वास को ठेस न लगे इसका मैं पूरा ख्याल रखूंगा।

और फिर उस रात उसे छत्तीस प्रकार का स्वादिष्ट भोजन कराया गया–

वाह! क्या नीति है? बलि के बकरे को खिलापिला कर मस्त कराया जा रहा है। लेकिन मेरा नाम भी बांकेलाल है, निबट लूंगा इस राजा के बच्चे से भी।

और दूसरे दिन दरबार में–

बांकेलालजी, उस राक्षस की खोज के लिए आपको जिस तरह की आवश्यकता हो हमें बताएं।

महाराज, सबसे पहले तो मैं यह जानना चाहूंगा कि वह राक्षस राजकुमारीजी को उठाकर किस दिशा में ले गया है?

उत्तर दिशा में, जंगल की ओर।

हूं...

... ठीक है महाराज। आप मेरे साथ पांच सैनिक भेज दें। मैं अभी राजकुमारीजी की खोज में जाना चाहता हूं।

फिर पांच सैनिकों के साथ बांकेलाल राजकुमारी सपनलता की खोज में उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा—

हे भगवान, सब कुछ हो, लेकिन मेरा सामना उस दस सींगों वाले राक्षस से न हो। फिर मैं कुछ दिनों की तलाश के नाटक के बाद यहां के राजा से क्षमा मांगकर अपनी जान बचा लूंगा।

और बांकेलाल अपने पांच सैनिकसाथियों के साथ जंगल में कुछ ही आगे बढ़ा था कि तभी—

आ हा-हा हा!

अगले ही पल—

आहा! हा-हा! वाह! मानव!! आज तो भोजन खुद चलकर मेरे पास आया है। वाह! हा-हा-हा!

उफ! आज तो मारे गये।

दस सींगों वाला राक्षस!

देखते ही देखते—

किट-किट...

उफ!

???

...राक्षस एक-एक करके पांचों सैनिकों को खा गया और अन्त में—

आ-हा. हा. हा!

म...मुझे छोड़ दीजिए राक्षस राज! म...मैं आपके बहुत काम आऊंगा। बस एक बार आप मेरी जान बख्श दीजिए।

तुम! एक अदना से इन्सान और मेरे किसी काम आओगे। आ हा हा हा।
जी राक्षसराज, मैं आपके भोजन के लिए प्रतिदिन पांच ऐसे ही हट्टे-कट्टे सैनिक यहीं पहुंचा सकता हूं।

हा-हा-हा! तुच्छ मानव, तू मुझे मूर्ख समझता है। मैं तेरी बातों का कदापि भरोसा नहीं कर सकता।
राक्षसराज, मैं भगवान शिव की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं प्रतिदिन पांच सैनिकों को आपकी सेवा में हाजिर किया करूंगा।

बांकेलाल की बात सुनकर राक्षस सोचने लगा—
अगर यह अपने कथनानुसार प्रतिदिन पांच मनुष्यों को यहीं ले आया करे तो मुझे अपने भोजन की तलाश में भटकना न पड़े और अब चूंकि मेरा पेट भी भर चुका है तो क्यों न मैं इसकी बात मानकर इसे छोड़ दूं।

यह सोचकर—
ठीक है मनुष्य! मैं तेरी बात पर यकीन किये लेता हूं, लेकिन याद रख, मुझे धोखा देने की कोशिश मत करना वरना...
राक्षसराज, मैं आपको धोखा देने का कभी प्रयत्न नहीं करूंगा।

इस तरह दस सींगों वाले राक्षस से अपनी जान बचाकर बांकेलाल जब वापस राजमहल पहुंचा तो—
आओ बांकेलाल, हम तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे... लेकिन हमें तुम्हारे साथ वे पांच सैनिक नहीं दिखाई दे रहे जो तुम्हारे साथ गए थे।
क्या! सैनिक अभी तक वापस नहीं लौटे??
बांकेलाल ने चौंकने का शानदार अभिनय किया।

तुम इस तरह चौंके क्यों बांकेलाल? पांच सैनिक तो तुम्हारे ही साथ थे, फिर वे तुम्हारे साथ नहीं लौटे तो इसका कारण भी तुम्हें ही मालूम होगा।

ज...जी महाराज, दरअसल हमारे जंगल में प्रवेश करते ही एकाएक जोरों की आंधी चली और फिर वे पांचों सैनिक मुझसे बिछड़ गये, और मैं बड़ी मुश्किल से यहां पहुंचने में सफल हो पाया हूं।

ओह! पता नहीं वे सैनिक रास्ता भटक गये हैं या किसी मुसीबत में फंस गये हैं, खैर बांकेलाल तुम भोजन करके विश्राम करो, बाकी कल देखा जायेगा।

दूसरे दिन दरबार में—

सेनापति, हमारे पांच सैनिक वापस लौटे या नहीं जो कल बांकेलाल के साथ गए थे?

जी नहीं, महाराज!

मूर्खराजा, तुम्हारे वे पांचों सैनिक अब उस दुनिया में पहुंच चुके हैं जहां से आज तक कोई नहीं लौटा और मैं धीरे-धीरे तेरी सारी सेना भी वहीं पहुंचा दूंगा हा-हा-हा! बड़ा आया था मुझे मौत के मुंह में धकेलने वाला!

हूंह! बांकेलाल, तुम्हारा आज का क्या कार्यक्रम है?

महाराज, मैं आज भी उस दस सींगों वाले राक्षस की तलाश में जाऊंगा, किन्तु आज हम सिर्फ छः लोग जायेंगे, यानी एक मैं और मेरे साथ पांच बहादुर सैनिक!

सेनापति, तुम सेना के पांच बहादुर सिपाही, बांकेलाल के साथ भेज दो।

जी महाराज!

फिर बांकेलाल पांच सैनिकों के साथ उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा—

काश! इन्हें पता होता की यह राजकुमारी की खोज में नहीं, मौत के मुंह में जा रहे हैं।

फिर बांकेलाल सैनिकों सहित जब राक्षस द्वारा निर्दिष्ट स्थान पर पहुंचा तो –
अरे! जंगल में इतना सुन्दर महल! भला यह महल किसका हो सकता है?
आओ देखें इसमें कौन रहता है?

राजकुमारी, यह मेरा प्राणों से प्रिय तोता है, कोई इसकी तरफ टेढ़ी नजर से भी देखेगा तो मैं उसकी बोटी-बोटी कटवा जाऊंगा।...
???
!!!

... और राजकुमारी, मैं तुमसे प्रेम करता हूं लेकिन... अरे! यह क्या? मानव गन्ध! देखें... कौन आया है मौत के मुंह में।
???

अगले ही पल –
???
???
दस सींगों वाला राक्षस!

आहा! हा... हा! मानव, मैं तुमसे खुश हुआ। वाकई तुमने मेरे लिए उत्तम भोजन का प्रबन्ध किया है।

ही-ही-ही! राक्षसराज, मैं तो आपकी हमेशा ऐसी ही सेवा करने के लिए वचनबद्ध हूं। आपका भोजन हाजिर है, भोजन कीजिए।
ओह! धोखा।
क्या धोखा?
नहीं मानव, मैं तुम्हें नहीं खाऊंगा, बल्कि मुझे अपने देवता सुम्बा बौतान को प्रसन्न करने के लिए ऐसे ही एक सौ एक मनुष्यों की आवश्यकता है, ताकि मेरा देवता प्रसन्न होकर मुझे साधारण मानव सा आकार व इस राजकुमारी के अनुरूप सुन्दर रूप दे दे...
...ताकि मैं इससे ब्याह कर सकूं! अतः मानव, अब तुम्हें मेरे लिए कल तक सौ मनुष्यों को यहां पर लाना है, समझे?
स... सौ... किन्तु...
किन्तु, परन्तु कुछ नहीं। कल तक तुम्हें सौ मानव यहां पहुंचाने हैं वरना मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊंगा।
ज... जी राक्षसराज!
बांकेलाल जाने के लिए मुड़ा...
... किन्तु तभी—
धूर्त बांकेलाल, विश्वास घाती, तूने हमारे महाराज के साथ और हमारे साथ विश्वास घात किया है। ईश्वर इसके लिए तुझे कभी माफ नहीं करेगा।
???
!!!

नीच, तू मेरे पिताजी के साथ विश्वासघात कर रहा है, मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।
उफ।
राजकुमारी, इससे पहले मेरे लिए सौ मनुष्यों की व्यवस्था कर लेने दो ताकि मैं सुन्दर मानव जैसा हो जाऊं। फिर यदि तुम कहोगी तो मैं इसे कच्चा चबा जाऊंगा!
मैं थूकती हूं, तुम पर और इस कमीने इंसान पर। थू sss
??
फिर वापस राजमहल लौटते हुए बांकेलाल सोच रहा था–
बेटा बांकेलाल, राजकुमारी सपनलता की जिन्दगी तेरी मौत का पैगाम है, क्योंकि यदि राजकुमारी कभी राक्षस की कैद से भाग निकलने में सफल हो गयी या फिर... राक्षस...
...राजकुमारी से ब्याह करने में सफल हो गया तो राजकुमारी राजा को तेरी मक्कारी की कहानी सुना देगी, और तब तेरे गले में होगा फांसी का फंदा...
... बस बेटा बांकेलाल, यह समझ ले कि राजकुमारी का जीवन तेरी मौत है और राजकुमारी की मौत तेरा जीवन। जल्दी से किसी तरह राक्षस के हाथों राजकुमारी को ठिकाने लगा और फूट ले यहां से। जान बची तो लाखों मिलेंगे।

लेकिन राजकुमारी की मौत उस राक्षस के रहते नहीं हो सकती है। अरे, यदि मैं उस तोते को चुपके से मार दूं तो राक्षस समझेगा राजकुमारी ने मारा है, और वह फिर राजकुमारी को मार देगा! अरे, वाह, यह मारा पापड़ वाले को!
यह सोचते ही वह खुशी से उछल पड़ा।

फिर राजमहल पहुंचते ही—
यह क्या बांकेलाल? आज भी तुम अकेले ही वापस आए हो। हमारे वे पांच सैनिक कहां हैं जो तुम्हारे साथ गए थे?

महाराज, आप उन सैनिकों की जरा भी चिन्ता न करें। उन्हें मैं दस सींगों वाले राक्षस की निगरानी में लगा आया हूं।
???
???

क्या... तो तुमने उस राक्षस को ढूंढ लिया! शाबास... लेकिन हमारी बेटी तो सुरक्षित है न?
??

जी महाराज, राजकुमारी जी ठीक हैं और उम्मीद है कि कल तक मैं उन्हें उस राक्षस के चंगुल से मुक्त कर यहां लाने में सफल हूंगा...

... हां, मुझे कल सौ वीर व साहसी सैनिकों की मदद की आवश्यकता है।
ठीक है, बांकेलाल, हम सौ सैनिक तुम्हारे साथ भेज देंगे।

लेकिन बांकेलालजी, उन सौ सैनिकों के साथ कल मैं भी आपके साथ चलूंगा।
य...यह तो बहुत ही अच्छा होगा।
मूर्ख सेनापति, यदि तू स्वयं ही मौत के मुंह में जाना चाहता है तो मैं क्या करूं?

दूसरे दिन—
सेनापतिजी, यही है दस सींगों वाले राक्षस का महल आप लोग यहीं रुककर मेरे अगले किसी आदेश या इशारे का इन्तजार करें। मैं अन्दर जाकर स्थिति को देखता हूं।
???

यदि मैं राक्षस के महल में चुपके से घुसकर उसके प्राणोंप्रिय तोते को मार दूं तो वह राजकुमारी को मार देगा, लेकिन मेरे भीतर घुसते ही उसे मेरी गंध से पता चल जाएगा।

तभी उसे अपने पास रखी कस्तूरी का ध्यान आया तो उसकी आंखें चमकने लगीं—
वाह! बन गया काम!
मित्र, यह कस्तूरी है। इसकी महक के सामने प्रत्येक महक या गन्ध छिप जाती है।
फिर उसने अपनी जेब से कस्तूरी निकाली और महल में चला गया—

अन्दर पहुंचकर—
वाह! सामने ही वह कमरा है जिसमें राक्षस का प्राणोंप्रिय तोता है। ईश्वर, मेरी मदद करना।
बांकेलाल सामने वाले कमरे की ओर बढ़ा—

और उसी महल के अन्य कमरे में—
अरे! यह तो कस्तूरी की सुगंध है। लगता है कोई हिरण मेरे महल में प्रवेश कर गया है... हां, तो राजकुमारी, बोल तू मेरे साथ विवाह करने को तैयार है या नहीं?
कदापि नहीं, मैं थूकती हूं तुम पर।

क्या ?? तेरी यह मजाल ! मन तो करता है तुझे अभी इसी वक्त कच्चा चबा जाऊं।

कहने के साथ ही राक्षस भयानक अन्दाज में राजकुमारी सपनलता की ओर बढ़ा।

उधर बांकेलाल ने पिंजरा खोलकर तोते को कसकर पकड़ा—

उफ, यह क्या ? ऐसा लगता है किसी ने मेरी कमर कस कर पकड़ ली है। आह ! लगता है कोई मेरे प्रिय तोते तक पहुंचने में सफल हो गया है।

राक्षस ने बाहर की ओर भागना चाहा, लेकिन भाग नहीं सका। यह रहस्य कोई नहीं जानता था कि उस तोते में राक्षस के प्राण छिपे हैं।

ठीक उसी समय बांकेलाल ने तोते की एक टांग तोड़ दी और—

आई ई ईईऽऽ

तोते की टांग टूटते ही राक्षस की भी एक टांग टूट गई।

किसी तरह जमीन पर घिसटता राक्षस बांकेलाल के पास पहुंचा—

दुष्ट मानव, यह तू क्या कर रहा है ? फौरन इस तोते को छोड़ दे वर्ना मैं तुझे जीवित न छोड़ूंगा।

???

उफ ! बेटा बांकेलाल, आज तेरी मृत्यु निश्चित है। यह राक्षस तुझे जिन्दा नहीं छोड़ेगा।

और भारे भय के बांकेलाल लहराया...

...और अगले ही पल वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा—

टेंटेंऽऽ

और उसके नीचे दबकर तोता मर गया।

तोते के मरते ही राक्षस के भी प्राणपखेरू उड़ गये, क्योंकि उसी तोते में राक्षस के प्राण थे—

बांकेलाल को उठाकर शीतलगढ़ के महल में लाया गया। दूसरे दिन राजा विजयेन्द्रसिंह ने बांकेलाल को पांच सौ स्वर्ण मुद्राएं पुरस्कार में देकर सम्मान सहित विदा किया—

समाप्त